कक्षा –12

मानव अपने जीवन निर्वाह के लिए उस स्थान का चयन करता है और आवासों का निर्माण करता है। उन आवास समूहों को मानव अधिवास या बस्तियों के नाम से जाना जाता है। इन आवासों में तम्बू, झौंपड़ी, कच्चे मकान एवं पक्के तथा बहुमंजली इमारतें होती हैं।

मानव बस्तियों के प्रकार– बस्तियों में निवास करने वाले लोगों के कार्यों के आधार पर एवं बस्तियों के आकार के आधार पर इनको दो भागों में बॉटा जा सकता है।

क. ग्रामीण बस्ती ख. नगरीय बस्ती

क. ग्रामीण बस्ती– इन बस्तियों में निवास करने वाले लोगों का प्रमुख व्यवसाय– कृषि, पशुपालन, लकड़ी काटना, खान खोदना, शिकार खेलना आदि होता है।

प्रो0 व्लास के अनुसार '' Hkkjr ,d vkn'kZ xkeh.k cfLr;ksa dk mRre mnkgj.k gS ''

ग्रामीण बस्तियों के प्रकार– बनावट के आधार पर ग्रामीण बस्तियॉ निम्न प्रकार की होती हैं।

1. सघन बस्तियॉ– इस प्रकार की बस्तियॉ ऐसे स्थानों विशेषकर मैदानी क्षेत्रों में मिलती हैं जहॉ पर मानव को उत्तम जलवायु, पानी की उपलब्धता, कृषि, रोजगार, शिक्षा, यातायात आदि साधनों प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

2. प्रकीर्ण बस्तियॉ– इस प्रकार की बस्तियों में मकान एक दूसरे से दूर–दूर तक बसे हुए होते हैं जो कच्ची सड़कों तथा पगडण्डियों से आपस में एक दूसरे से जुड़ें रहते हैं।

3. एकांकी बस्तियॉ– इस प्रकार की बस्तियों में मकान प्रायः दूर–दूर तक बसे होते हैं। इनमें शिकारी, चरवाहे, एवं लकड़हारे निवास करते हैं। ऐसी बस्तियॉ भारत में उच्च हिमालयी प्रदेशों में एवं आदिवासी क्षेत्रों में मिलती हैं।

4. अपखण्डित बस्तियॉ– इस प्रकार की बस्तियॉ समूह में दूर–दूर तक बसी होती हैं। इस प्रकार की बस्तियों को भारत में स्थानीय आधार पर, नगला, पुरूवा, पाला, ढाणी आदि नामों से जाना जाता है।

बस्तियों की उत्पत्ति एवं विकास के कारक–

बस्तियों की स्थापना एवं विकास में निम्न कारक विशेष रूप से उत्तरदायी होते हैं।

1. भौतिक कारक– बस्तियों के विकास में भौतिक कारकों में जलवायु, उच्चाबच, धरातल, मैदानी, मरूस्थली ऊबड़ खाबड़ स्थान का प्रमुख योगदान होता है।

2. नृजातीय एवं सांस्कृतिक कारक– इसमें जनजातीयता, जाति सांम्प्रदायिक पहचान प्रमुख होती हैं। इनमें सामाजिक प्रभुत्व वालें लोगों के आवास केन्द्र में तथा उनकी सेवा करने वाले लोग बाहर बसे होते हैं।

3. सुरक्षा कारक– बस्तियों के बसावट में सुरक्षा कारक महत्व पूर्ण स्थान रखते हैं। मानव सदैव से सुरक्षित जीवन यापन के लिए हमेशा से सुरक्षित स्थानों पर बसा है।

xkeh.k cfLr;k d forj.k d ifr : i&

गॉव का वाह्य आकार या आकृति एवं मकानों एवं मार्गों की स्थिति और व्यवस्था के आधार पर गॉवों में निम्नलिखित प्रतिरूप मिलते हैं।

1. रेखीय प्रतिरूप– इस प्रकार के गॉव प्रायः सड़क के दोनों ओर एवं नदियों के दोनों ओर किनारों पर बसे होते हैं। इस प्रकार के गॉव या मकान पंक्तियों में बसे होते हैं।

2. चौकपट्टी प्रतिरूप– इस प्रकार के गॉव दो सड़कों के मिलन अथवा चौराहों पर बसे होते हैं। यहॉ गलियॉ आदि सड़कें एक दूसरे के समानान्तर होती हैं। मेरठ में गेसूपुर, दोतार, रेबड़ी आदि गॉव ऐसे ही बसे गॉव हैं।

3. अरीय या त्रिज्याकार प्रतिरूप– इस प्रकार के गॉवों में किसी केन्द्रीय स्थिति में गलियां एवं सड़कें मिलती हैं और एक चक्र के रूप में मकान बस जाते हैं। उनको अरीय प्रतिरूप कहा जाता है।

4. तारा प्रतिरूप– इस प्रकार के गॉव त्रिज्याकार में बस जाते हैं और विकसित होते हुए सड़कों के किनारे फैलते जाते हैं। तारा प्रतिरूप कहे जाते हैं।

5. वृत्ताकार प्रतिरूप– इनके निहारिका, नाभिक आकार के नाम से भी जाना जाता है ऐसे गॉव एक केन्द्रक के चारों और बसते जाते हैं। और वृत्ताकार रूप धारण कर लेते हैं। वृत्ताकर प्रतिरूप कहलाते हैं।

6 तीर प्रतिरूप– इस प्रकार के प्रतिरूप अन्तरीपों के सिरे पर या तीन ओर से जल से घिरे स्थान पर बस जाते हैं जिनका अगला शिरा नुकीला एवं पृष्ठ भाग फैला हुआ होता है।

7. सीढ़ीदार प्रतिरूप– इस प्रकार के प्रतिरूप पहाड़ी ढालों पर मिलते हैं जहॉ पर मकान पंक्ति में बसे होते हैं।

8. आयताकार गॉव– ऐसे गॉव अधिकतर मरूस्थली भागों में मिलते हैं ऐसे गॉवों में मकान किसी ऊॅचे भाग पर बसाये जाते हैं।

9. अनियमित एवं अनाकार गॉव– ऐसे गॉव बिना किसी योजना के बसाये जाते हैं इनका आकार अनियमित होता है।

10 जूते की डोरी के आकार वाले गॉव– ऐसे बस्तियां प्रायः डेल्टाई क्षेत्रों नदी के जल वाले क्षेत्र में ऊपरी भागों में बसे होते हैं।

uxjh; cfLr;k&& नगरों की स्थिति अपने कार्यों के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों से भिन्न होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण बस्तियों का प्रमुख आधार कृषि एवं पशुपालन होता है, जबकि नगरीय क्षेत्रों में लोगों का प्रमुख व्यवसाय उद्योग एवं व्यापार तथा सेवा कार्य होता है।

uxjk d idkj& विभिन्न देशों में नगरों को परिभाषित करने के लिए भिन्न– भिन्न आधार होते हैं। भारत में 2001 की जनगणना में नगरों को परिभाषित करने के निम्नांकित मानकों को अपनाया गया है।

क. सवैधानिक नगर– संवैधानिक नगर वे हैं जहॉ नगर पालिका, नगर निगम, कैण्टोनमैण्ट बोर्ड या नोटीफाइड ऐरिया कमेटी है।

ख. जनगणना नगर– वे सभी स्थान जनगणना नगर कहलाते हैं जो निम्नलिखित शर्तों को पूरा करते हैं।

1. जिनकी जनसंख्या कम से कम 5,000 हो।

2. जिनकी 75 प्रतिशत कार्यशील पुरूष जनसंख्या कृषि को छोड़कर अन्य कार्यों जैसे विनिर्माण या सेवा क्षेत्र में संलग्न है।

3.जिनकी जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर या 1000 प्रति वर्ग मील हो।

Hkkjr e uxjk dk fodkl& भारत में सिन्धु घाटी की सभ्यता 5000 वर्ष पुरानी मानी जाती है जिनके ध्वंसावशेष मोहनजोदड़ों और हड़प्पा में देखने को मिलते हैं।

1. ऐतिहासिक नगर– चित्तौड़गढ़, आहड़, वागौर, कालीबंगा, मिथिला, जयपुर, शिवनेर, मथुरा, थानेश्वर, अयोध्या, हस्तिनापुर आदि नगरों का विकास गंगा की घाटी में हुआ।

2. वैदिक काल– इस काल में कुरूक्षेत्र, पैहोवा, थानेश्वर, कन्नौज, अयोध्या, कैथल, करनाल, पानीपत सोनीपत आदि नगर ।

3. महाभारत काल– रूटोल, रामटेक, मनसर, मनिकुलकण्ड, भावपुर, आंन्ध्र,कर्नाटक,सौराष्ट्र आदि क्षेत्रों में स्थित थे।

4. बौद्ध काल– यह समय नगरों के निर्माण के हिसाब से स्वर्णिम युग कहा जाता है। इस समय के शासकों ने नगरों को सुनियोजित तरीके से बसाया था। ये नगर तक्षशिला, नालन्दा, अवन्तिका, अजन्ता, पाटलीपुत्र, राजगिर आदि नगरों का विकास हुआ।

मुगल काल– इस काल में अकबर के समय फतेहपुर सीकरी, आगरा, शाहजहॉ के समय आगत एवं दिल्ली औरंगाबाद, तुगलकाबाद, हैदराबाद बंगलौर आदि नगर बसे।

Hkkjr e uxjh;dj.k dh izofRr& भारत में नगरों की प्रवृत्ति को निम्न प्रकार समझा जा सकता है।

1. नगरीकरण की वृद्धि का मन्द युग– 1901 से 1931 तक का समय नगरीकरण का मन्द युग कहा जाता है। विशेष रूप से यह समय अकाल एवं गम्भीर बीमारियों का समय रहा था।

2. नगरीकरण का मध्यम युग– यह काल 1931 से 1961 तक माना जाता है। इस काल में नगरीय जनसंख्या लगभग 45 मिलियन बढ़ी।

3 नगरीकरण का तीव्र युग– 1961 के बाद देश में नगरीयकरण में तेजी से वृद्धि हुई इसका प्रमुख कारण उद्योग धन्धों का विकास, अर्थव्यवस्था में सुधार, शिक्षा, चिकित्सा प्राकृतिक प्रकोप पर नियंत्रण हुआ इस समय में 1991 की जनगणना के आधार पर नगरीय जनसंख्या में 25.72% वृद्धि हुई।

uxjh; cfLr;k d i|dkj&

d- tul[;k d vk/kkj ij– जनसंख्या के आधार पर नगरों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है–

1. कस्बा– 1 लाख से कम जनसंख्या वाले शहर को कस्बा कहा जाता है।

2. नगर– जिनकी जनसंख्या 10 लाख तक होती है।

3. महानगर– जिनकी जनसंख्या 50 लाख तक होती है।

4. वृहद नगर– जिनकी जनसंख्या 50 लाख से अधिक होती है।

5. सन्नगर– नगर बढ़ते फैलते हुए किसी छोटे नगर से जुड़ जाते हैं, सन्नगर कहे जाते हैं।

[k- uxjk dk i|dk;kRed oxhZdj.k& कार्यों के आधार पर नगरों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है–

1. औद्योगिक नगर– जहॉ उद्योग धन्धें स्थापित हो जाते हैं। जैसे– जमशेदपुर, कानपुर, मुम्बई अहमदाबाद आदि ।

2. व्यापारिक नगर– जहॉ व्यापार केन्द्र होते हैं जैसे– मुम्बई, विशाखापटनम, गंगानगर, भीलवाड़ा चेन्नई आदि ।

3. परिवहन नगर– ये परिवहन मार्गों के मिलन पर होते हैं।

4. प्रशासनिक नगर– जैसे राजधानी तथा थाना, बैंक डाकघर आदि।

5. खनिज केन्द्र– जहॉ खनिजों के भण्डार स्थित होते हैं, जैसे– रानीगंज, बोकारो, मयूरभंज, डिगबोई, अंकलेश्वर आदि।

6. धार्मिक केन्द्र– जैसे मथुरा, अयोध्या, काशी, बनारस, इलाहाबाद, नासिक, पुरी, अजमेर आदि

7. गैरिसन या छावनी नगर– जहॉ सैनिक केन्द्र होते हैं उन्हें छावनी नगर कहा जाता है। जैसे– पटियाला, अम्बाला, मेरठ, जबलपुर, नसीराबाद, सागर आदि।